नियोजित हस्तक्षेप और आज़ादी | बच्चों की ज़रूरत क्या है

एक व्यक्तिगत विवेचना

वाणी पेरिओडी और उमाशंकर पेरिओडी

वाणी और उमाशंकर पेरिओडी ने अपने बच्चों के पालन-पोषण और उसमें उनके द्वारा अपनाई गई असामान्य शैली के बारे में खुलकर बात की। मानदण्डों का पालन नहीं करने का अर्थ था कोशिश करते रहना और ग़लतियों से सीखना। इसमें गहरे विचार-विमर्श की कभी कमी नहीं रही, जिसने उनके बच्चों को सकारात्मक तरीक़े से प्रभावित किया और उनमें लचीलेपन और समानुभूति के साथ ही बदलती जीवन स्थितियों के साथ सामंजस्य बैठाने की क्षमता का निर्माण किया।

हमने योजना बनाई थी कि हमारा पहला बच्चा/ बच्ची फरवरी में जन्मे। सब कुछ ठीक चल रहा था; डॉक्टर ने डिलीवरी की तारीख़ 10 फरवरी बताई थी। हम बहुत ख़ुश थे कि चीज़ें हमारी योजना के अनुसार हो रही थीं। हमारी पहली बेटी, तीन हफ़्ते पहले, जनवरी में आ गई। इस घटना ने हमें बच्चों को पालने का पहला सबक़ दिया - हम अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए जो भी योजनाएँ बनाते हैं ज़रूरी नहीं कि वे सब-की-सब हमारे हिसाब से होती चली जाएँ! हमें खलील जिब्रान की याद आई, "तुम्हारे बच्चे तुम्हारे बच्चे नहीं हैं।"

ठोस परिणामों के लिए बच्चों के साथ किसी हस्तक्षेप की योजना बनाना बहुत कठिन है। जहाँ तक बच्चों का सवाल है, आप न तो उन्हें बिना किसी नियोजित हस्तक्षेप के सिर्फ़ ऐसे ही बड़ा होने के लिए छोड़ सकते हैं और न ही आप कोई ठोस योजना बना सकते हैं। तो, क्या हमें, बच्चों के साथ जो कुछ भी होता है, उसे होने देना चाहिए? और उनका मार्गदर्शन नहीं करना चाहिए? ये बहुत कठिन चुनाव है। इस लेख में, माता-पिता के रूप में हमने क्या किया, इस पर विचार करने का प्रयास कर रहे हैं क्योंकि हम चाहते थे कि हमारे बच्चे आत्मनिर्भर, साहसी, दयालु और आज़ाद बनें। हमें पता नहीं था कि बच्चों को कैसे पालें और हालाँकि हमें दूसरों से मदद मिली, लेकिन मूलतः यह कोशिश कर-करके ग़लतियों से सीखते जाने का तरीक़ा था। हम कभी-कभी सफल होते थे और कई बार असफल। कई चीज़ें सहज रूप से की जाती हैं; कई अन्य चीज़ें जीवन जीने के प्रवाह में बस घटित होती हैं!

पीछे मुड़कर देखने पर, हम कुछ ऐसे निर्णय देख सकते हैं जिनसे हमारी बच्चियों को बढ़ने में मदद मिली। वापस अपने गाँव में बसना एक ऐसा ही फ़ैसला था। इससे कई तरह से मदद मिली। हमारी बच्चियाँ ग्रामीण परिवेश में पली–बढ़ीं। हालाँकि हमारा गाँव काल्लिगे मैंगलोर शहर से सिर्फ़ 22 किमी दूर है, लेकिन यह बँटवाल तालुक के सबसे पिछड़े गाँवों में से एक है। 1985 तक हमारे घर में बिजली नहीं थी, कुछ ही घर ऐसे थे जिनमें बिजली थी। हमने अपने घर से काम करना शुरू किया। हमने चावड़ी (Chawadi) के साथ काम किया, यह एक ऐसा संगठन था जो हमारे गाँव के लोगों, खासकर युवाओं के साथ काम करता था। हमने युवा लड़कियों को यक्षगान करने के लिए प्रशिक्षित किया, जो एक पुरुष प्रधान लोक कला और नृत्य है। यह हमारी अपनी बेटियों के लिए एक स्वाभाविक परवरिश थी। उन्होंने गाँव की बहुत-सी संस्कृति को आत्मसात किया और बहुत सारे दोस्त बनाए। हमारे पास औपचारिक नौकरियाँ नहीं थीं; हम स्वतंत्र रूप से काम कर रहे थे। हमारी कमाई कम थी इसलिए, उन दोनों ने ग़रीबी भी देखी, और इसलिए भी कि गाँव में उनके आस-पास ग़रीबी थी। इसने हमारी बेटियों को एक अच्छा दृष्टिकोण दिया और समाज के कमज़ोर तबक़ों के प्रति जुड़ाव बनाने और उनके लिए सहृदय होने के क्रम में विविधता से उनका परिचय हुआ। बेंगलूरु चले आने के बाद भी उन्होंने गाँव में अपने दोस्तों के साथ अपनी दोस्ती जारी रखी।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण निर्णय बच्चियों को कन्नड़ माध्यम के सरकारी प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश दिलाना था। यह एक बेहद मुश्किल निर्णय था; हमारे दोस्तों और रिश्तेदारों ने हमें हतोत्साहित किया। लेकिन हम इस बारे में बहुत स्पष्ट थे — हमें यक़ीन था कि हमारी बच्चियों को सरकारी स्कूल में एक समृद्ध अनुभव मिलेगा। हमारा मानना था कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई अच्छी होती है और निजी स्कूलों की तुलना में बच्चों पर कम दबाव होता है। सरकारी स्कूलों में जगह भी बहुत होती है और हमारी बेटियाँ गाँव के अन्य बच्चों और कुछ कम सुविधा प्राप्त बच्चों के साथ बड़ी होंगी। इससे उन्हें अपने भावी जीवन के लिए एक ठोस बुनियाद मिलेगी।

हमारे दोस्तों ने हमें ख़ूब बुरा-भला भी कहा कि हम अपनी बच्चियों को एक निजी स्कूल में मिलने वाले समृद्ध अनुभव से

वंचित कर रहे हैं। उन्होंने हमसे पूछा कि भविष्य में जब हमारी बेटियाँ उन्हें निजी स्कूल की शिक्षा से वंचित करने पर हमसे सवाल करेंगी, तो हम उन्हें क्या कहेंगे। इसने हमें सोचने पर मजबूर कर दिया। हमने तय किया कि हम बच्चों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान करने के लिए स्कूल के साथ मिलकर काम करेंगे। हमने ऐसे अनुभवों की योजना बनाई जो बच्चों को समग्र रूप से विकसित होने और स्वतंत्र, विवेकपूर्ण, दयालु और आज़ाद होने में मदद करे। इसके लिए हमने कई रचनात्मक और नेतृत्व वाले अनुभव आयोजित किए, रचनात्मकता और नेतृत्व कौशलों का विकास करने वाली कार्यशालाओं की एक शृंखला आयोजित की और निरन्तर चलने वाले कहानी-वाचन (story-reading) सत्र आयोजित किए, जिसमें इस स्कूल के विद्यार्थियों को किताबों से परिचित करवाया गया। इन प्रायोगिक सत्रों में हमारे मित्रों ने बहुत मदद की। हमने अपनी बच्चियों के बड़े होने के बाद भी इन कार्यशालाओं और गतिविधियों को स्कूल और गाँव में जारी रखा। हमारी बच्चियाँ और उनके दोस्त अब भी गाँव के बच्चों के लिए ये गतिविधियाँ करते हैं। एक स्थानीय सरकारी स्कूल में पढ़ने से हमारी बच्चियों में एक बहुत ही अलग नज़रिया पैदा हुआ।

सातवीं कक्षा तक सरकारी स्कूल में पढ़ने के बाद, हमारी बच्चियाँ एक वैकल्पिक स्कूल 'सेंटर फॉर लर्निंग' (Centre for Learning — CFL) में गईं, जो बेंगलूरु में मगदी के पास वरदनहल्ली में है। हमारी बच्चियाँ जब इस स्कूल में दाख़िल हुईं तो उन्हें अँग्रेज़ी का एक शब्द भी नहीं आता था। लेकिन स्कूल ने उनका आत्मविश्वास बढ़ाया और उन्हें कभी हीन महसूस नहीं होने दिया। अँग्रेज़ी भाषा सीखने में मदद करने के लिए उन्होंने हमारी बच्चियों के साथ जो प्रोजेक्ट किया वह बहुत ही रचनात्मक था। उन्होंने हमारी बच्चियों से कन्नड़ माध्यम के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के लिए अँग्रेज़ी में नाटक मंचित करने को कहा। स्कूल के शिक्षक हमारी बच्चियों के लिए बहुत अच्छे मार्गदर्शक थे। वे हमारी बच्चियों के बारे में हमसे ज़्यादा जानते थे। इसलिए स्वाभाविक रूप से हमने अपनी लड़कियों को इन शिक्षकों से परामर्श लेने की अनुमति दी। स्कूल ने हमारी बच्चियों को अत्यधिक आलोचनात्मक होने, हर चीज़ पर सवाल उठाने और चिन्तनशील होने की जगह प्रदान की। इसने हमारी बच्चियों को एक बहुत ही अलग सामाजिक ढाँचे से परिचित कराया और उन्हें एक समृद्ध सामाजिक दायरा प्रदान किया।

इन शिक्षण संस्थानों ने मूल्यों के विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। हमारी बच्चियों के लिए घर और स्कूल के बीच कोई विरोधाभास नहीं था। पहले, उन्हें सरकारी स्कूल में आज़ादी, ग़रीबी, असुरक्षा और विविधता के बारे में संवेदनशील होने का अवसर मिला और फिर 'सेंटर फॉर लर्निंग' में उन्हें आलोचनात्मक होने, हर चीज़ पर सवाल उठाने और चिन्तनशील होने के लिए एक मज़बूत आधार दिया। अन्त में, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में यह सब पुनः स्थापित, समेकित और मज़बूत हो गया।

शुरुआत से ही, हमने अपनी बच्चियों के साथ हर मुद्दे पर बातचीत की चाहे वह हमारी आर्थिक समस्याएँ हों या परिवार में एक अन्य बच्चा/ बच्ची होना चाहिए या नहीं। बातचीत और संवाद की इस संस्कृति ने हमारी बहुत मदद की। स्पष्ट था कि कुछ भी और सब कुछ पर चर्चा की जाएगी और संयुक्त रूप से निर्णय लिया जाएगा - चाहे वह एक अतिथि के लिए मेनू तय करना हो, हमारे द्वारा किया गया कोई भ्रमण हो, स्कूल में दाख़िला लेना हो, हम में से किसी की भी कोई समस्याएँ हों। बाद के दिनों में यह बातचीत धीरे-धीरे संवाद के स्तर पर आ गई। अब हर बात में संवाद होता है। संवाद के ज़रिए चीज़ें तय होती हैं और सुलझाई जाती हैं। यह आसान नहीं है; समय लगता है क्योंकि चीज़ें आगे-पीछे होती रहती हैं, लेकिन अन्त में सब कुछ एक अच्छे मोड़ पर समाप्त होता है जिसमें सभी की रज़ामन्दी होती है।

जब हमारी पहली बच्ची होने वाली थी, तो घर में हमें सहयोग देने वाला कोई नहीं था। चूँकि वाणी महिला समाख्या (केन्द्र सरकार की एक परियोजना) में मैसूर की ज़िला समन्वयक के रूप में काम कर रही थीं, इसलिए हमने फ़ैसला किया कि उमाशंकर एक ब्रेक लेंगे। बच्ची की देखभाल और घर का रखरखाव जिसमें तीनों समय का खाना बनाना शामिल था, उनकी ज़िम्मेदारी थी। हमने यह व्यवस्था तब तक जारी रखी जब तक हमारी बच्ची साढ़े तीन साल की और स्वतंत्र नहीं हो गई। माँ के ऑफिस जाने और पिता के घर सम्भालने के इसी माहौल में हमारी बच्ची बड़ी हुई। हमें लगता है, इससे उसके अन्दर एक वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य विकसित हुआ जो उसके भीतर बहुत स्वाभाविक रूप से आया था। जब हमारी बेटी ने स्कूल जाना शुरू किया तो वह यह प्रचलित कविता को यूँ पढ़ती थी — 'अप्पनिगे ऑफिस केलसा, अम्मानिगे माने केलसा' की बजाय 'अम्मानिगे ऑफिस केलसा, अप्पनिगे माने केलसा' ('पिता ऑफिस में काम कर रहे हैं और माँ रसोई में काम कर रही है' के बदले 'माँ ऑफिस में काम कर रही है और पिता रसोई में काम कर रहे हैं')। हमें लगता है कि इसका हमारी बच्चियों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उनके घर में रोल मॉडल ऐसे थे जो मुख्यधारा की छवि से बिल्कुल अलग थे।

कुछ सामान्य-सी चीज़ें जो हम बच्चों के साथ करते हैं उनका भी उन पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। अम्मा (उमाशंकर की माँ) हमारे साथ रहती थीं और हमारी बच्चियों की देखभाल करती थीं। अम्मा को नसवार सूँघने की आदत थी और वह हर समय नसवार की डिब्बी खो बैठती थीं। फिर एक चिन्ता और

हड़बड़ी भरी खोज शुरू होती जिसमें सभी शामिल होते। एक बार हमारी बड़ी बेटी इनी ने अम्मा से कहा, "आपको अपनी नसवार की डिब्बी एक जगह रखनी चाहिए और हमेशा उसी जगह रखनी चाहिए, तो आप इसे नहीं खोएँगी और न ही इसे ढूँढ़ना पड़ेगा।" अम्मा ने न केवल यह सलाह मानी जो उनकी पोती ने दी थी बल्कि साथ ही यह भी स्वीकार किया कि इनी के इस विचार ने उनकी समस्या का समाधान कर दिया था। कोई केवल कल्पना कर सकता है कि इस घटना ने नन्ही पोती को कितना आत्म-सम्मान दिया होगा, जिससे उसे यह एहसास हुआ होगा कि लोग उसकी बात सुन सकते हैं और उसकी सलाह मान सकते हैं।

एक बार, छोटी बेटी इन्दु हमारे पड़ोस की बच्ची के साथ खेल रही थी। वे बहुत शोर कर रहे थे और उमाशंकर ने बच्ची को डाँट दिया। वह बच्ची घर चली गई। इन्दु नाराज़ हो गई और रोने लगी। वाणी ने उसे अपने पिता से इस बारे में बात करने के लिए कहा। इन्दु उमाशंकर के पास आई और बोली, "आपने उसे क्यों डाँटा? जब मैं उसके घर जाती हूँ तो वे मुझे नहीं डाँटते हैं।" उमा ने इस बारे में सोचा और कहा, "सॉरी, मैं उसे दोबारा नहीं डाँटूँगा।" बाद में जब वह बच्ची फिर से हमारे घर आई, तो सबसे पहले उमाशंकर ने उससे माफ़ी माँगी। हमें लगता है कि इस तरह की घटनाओं में बच्चों के लिए बहुत मज़बूत संदेश होता है।

पढ़ने के एक सत्र के दौरान, इनी झण्डों पर एक किताब देख रही थी। उसने अपनी माँ से कहा, "अम्मा, इन सभी झण्डों में भारत का झण्डा सबसे अच्छा है।" वाणी ने जवाब में कहा, "हाँ, हमारे लिए भारतीय झण्डा सबसे अच्छा है। अमरीकियों के लिए उनका झण्डा होगा, आस्ट्रेलियाई लोगों के लिए उनका झण्डा, पाकिस्तानियों के लिए पाकिस्तान का झण्डा। प्रत्येक देश का अपना झण्डा होता है और वे इसे प्यार करते हैं। इसलिए, हम केवल यह कह सकते हैं कि हमें अपना झण्डा पसन्द है और यह नहीं कि यह सबसे अच्छा झण्डा है।" हम इस घटना के बारे में भूल गए थे। हाल ही में, जब इनी अपनी स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रही थी, तो उसने हमें इस घटना के बारे में याद दिलाया और कहा कि इसका उस पर स्थायी प्रभाव पड़ा। इस घटना ने चीज़ों को देखने के उसके नज़रिए को बदल दिया। तो, हम नहीं जानते! यही छोटी-छोटी घटनाएँ हैं जो बच्चों में मूल्यों का निर्माण कर उन्हें पुख़्ता करती हैं।

हमने एक बहुत ही साधारण, कवेलू वाला घर बनाया था, जिसमें उचित रूप से दरवाज़े और खिड़कियाँ भी नहीं थे। अम्मा हमारे साथ रहने के लिए इस घर में आईं। यह हमारी बच्चियों के लिए बहुत अच्छा अवसर था। उनका पालन-पोषण अम्मा ने किया, जो एक बहुत मज़बूत, खुले विचारों वाली और विवेकशील महिला थीं। वे नए विचारों के प्रति खुली थीं और बच्चों की बहुत आज़ादी से देखभाल करती थीं। वे बच्चियों के साथ बहुत अच्छी तरह से जुड़ गई थीं और स्कूल की छुट्टियों के दौरान उनके सभी आठ पोते-पोतियाँ घर आते। पूरे दो महीने वे हमारे घर में रहते, अम्मा उनकी देखभाल करतीं। यह एक साथ रहना हमारे सभी बच्चों के लिए सीखने का एक बड़ा स्रोत था।

इनी के दाँतों में गैप थे और दाँत बाहर निकले हुए थे। इनी इन्हें ठीक करवाना चाहती थी। घर में इस पर चर्चा हुई। क्या हम सुन्दरता के इस रूप को महत्त्व देते हैं? क्या हमें इतना पैसा किसी ऐसी चीज़ पर ख़र्च करना चाहिए जिसमें हमारा विश्वास नहीं है? लेकिन हमने इनी के लिए फ़ैसला नहीं किया; हमने उससे कहा कि अगर वह चाहती है, तो वह अपने निर्णय के साथ आगे बढ़ सकती है। इस मुद्दे पर दोबारा कोई बात नहीं हुई।

हम सभी त्योहार मनाते थे - दीपावली, अन्य हिन्दू त्योहार, क्रिसमस और रमज़ान। मैंगलोर में क्रिसमस बहुत मज़ेदार होता है। हम कई दोस्तों से मिलने जाते। दूसरों को तोहफ़े देने का चलन हमारी इन्दु ने शुरू किया। वह क्रिसमस ट्री को सजाती और क्रिसमस की पूर्व सन्ध्या पर उसमें उपहार बाँधती जैसे कि सान्ता क्लॉज उपहार लेकर आया हो। हर कोई सरप्राइज गिफ़्ट का इन्तज़ार करता था। (हमने इस प्रक्रिया को रोक दिया जब हमें लगा कि यह एक रस्म बन रही है!) हम हमेशा रमज़ान के दौरान अपने मुस्लिम दोस्तों से मिलते। ऐसे मौक़े भी आए जब हम अपने घर में उन्हें आमंत्रित कर इफ़्तार करते।

जाति ऐसा विषय नहीं था जिसे हमने दबाया हो। हमने परिवार में इस पर खुलकर बातचीत की। उमाशंकर ने एक बच्चे के रूप में अनुभव किए गए बहुत सारे जातिगत भेदभाव (caste discrimination) को साझा किया। वाणी ने ब्राह्मणवादी संस्कृति को साझा किया जो उनकी जाति में प्रचलित थी। बच्चियाँ उच्च और निम्न जाति, दोनों के पहलुओं, उनकी अभिव्यक्तियों और प्रभाव को समझते हुए बड़ी हुईं। बच्चियों ने बहुत कम उम्र में जातिगत भेदभाव का अनुभव किया। उन्होंने उस छोटी-सी उम्र में इसका सामना करना भी सीखा। वाणी उनसे अपनी मातृभाषा हव्यका (Havyaka) में बात करती; हम घर पर कन्नड़ में बात करते। बच्चियों ने अम्मा और पड़ोसियों से तुलु (Tulu) सीखी। इसलिए सांस्कृतिक रूप से यह घर संस्कृतियों का एक समृद्ध मिश्रण था।

हमारी बच्चियाँ बड़ी होकर राजनीतिक रूप से भी जागरूक नागरिक बन गई हैं। यह कैसे हुआ, हमें नहीं पता। शायद इसलिए कि दोस्तों और विभिन्न समूहों के साथ हमारी सभी बातचीत का वे हिस्सा रहीं। मुझे लगता है कि उन्होंने स्वाभाविक रूप से राजनीति को आत्मसात किया क्योंकि

उन्होंने आन्दोलनों, विरोध प्रदर्शनों, कार्यशालाओं और गतिविधियों में भाग लिया था। हमने उन्हें किसी विचारधारा या 'वाद' (isms) में प्रशिक्षित नहीं किया। वे अपनी राय बनाने के लिए स्वतंत्र थीं। हमें लगता है कि इससे उन्हें अपने मत बनाने और आवश्यकता पड़ने पर उनको लेकर मुखर होने में मदद मिली।

इन्दु का सरकारी स्कूल में कठिन समय रहा। उसकी तुलना उसकी बड़ी बहन से की जाती थी। उसके शिक्षकों द्वारा उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। यह एक दर्दनाक अनुभव था। उसने स्कूल जाने से मना कर दिया था। हमने इस पर बहुत विचार किया और अन्त में इन्दु को स्कूल नहीं भेजा। हमने उसे घर पर पढ़ाया। हमारे दोस्तों ने कुछ विषयों में उसकी मदद की और घर पर वाणी बाक़ी विषयों पर ध्यान देती थीं। हमने उसके फ़ैसले का समर्थन किया, इससे इन्दु का काफ़ी आत्मविश्वास बढ़ा।

हम साथ में यात्राओं पर जाया करते थे। साधारण यात्राएँ - कई बार ये हमारे दोस्तों के घर की यात्राएँ होती थीं। लेकिन इन यात्राओं ने हमें साथ मिलकर अलग-अलग चीज़ों पर बातचीत करने और जीवन में साधारण चीज़ों का आनन्द लेने के लिए बहुत समय दिया। ये यात्राएँ हमारे परिवार को क़रीब लाईं। हम अपनी बच्चियों को अपने दोस्तों से मिलाने ले जाते। समुच्चय (Samuchaya) और अन्य एनजीओ की बैठकों में भी ले जाते थे। इससे हमारी बच्चियों के हमारे दोस्तों के साथ स्वतंत्र रिश्ते बनने लगे। हमारे कुछ युवा दोस्त हमारी बच्चियों के बहुत क़रीबी दोस्त भी बन गए।

एक चीज़ जो हमने बहुत सचेत रूप से अपनी बच्चियों के साथ की थी, वह यह थी कि उन्हें ऐसा कुछ भी करने के लिए मजबूर नहीं किया जो हमें सही लगता था। यह हमने बहुत मुश्किल से सीखा था। हमने अपने कई वरिष्ठ मित्रों को उनके बच्चों के साथ संघर्ष करते देखा है। वे उन्हें मार्गदर्शन देने या प्रभावित करने में असमर्थ होते हैं। हमारे पास ऐसे बहुत-से लोगों के उदाहरण हैं जो उच्च मूल्यों का पालन करते हैं लेकिन अपने बच्चों को उनका अनुसरण करवाने में सक्षम नहीं हो सके हैं। इसने हमें बहुत कुछ सोचने पर मजबूर किया। हमने जीवन में बहुत पहले ही तय कर लिया था कि हम वैसे ही रहेंगे जैसे हम चाहते हैं, लेकिन अपनी जीवनशैली या जीवन की पसन्दों को अपने बच्चों पर नहीं थोपेंगे। हमारी बच्चियाँ यह तय करने के लिए स्वतंत्र होंगी कि उनके लिए क्या अच्छा है। हम उन्हें सभी कार्यशालाओं, नाटकों, नुक्कड़ नाटकों, आन्दोलनों, प्रशिक्षणों और जहाँ भी हम जाते थे, साथ ले जाते थे। कुछ समय बाद, जब वे निर्णय लेने में सक्षम हो गईं, तो हमने पूरी तरह से उन पर यह निर्णय छोड़ दिया कि वे हमारे साथ चलना चाहती थीं या नहीं। और फिर हमारी बच्चियाँ तय करतीं कि उन्हें आना है या नहीं। फ़ैसला उनका ही होता। कई बार हम उनके फ़ैसले से निराश और दुखी हुए, लेकिन हमने उनके फ़ैसले का सम्मान किया। हमने महसूस किया कि हमारे इस क़दम ने एक-दूसरे के निर्णयों की एक बहुत स्वस्थ समझ निर्मित की।

एक चीज़ जिसने वास्तव में हमारी मदद की, वह थी - एक-दूसरे की आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने में मदद करना। चाहे वह वाणी की रचनात्मक यात्राएँ हों, जैसे नाटक, रज़ाई बनाना (quilting), या कुछ और जो वह करना चाहती थी या फिर नृत्य और गायन में इनी की रुचि या इन्दु का क्राफ्टवर्क और सिलाई - हम सभी ने एक-दूसरे को प्रोत्साहित किया और सभी को अपने शौक़ पूरा करने के लिए अवसर दिए। मुझे लगता है, इससे हमारा परिवार सुखी और सन्तुष्ट बना रहा।

हमारी पालन-पोषण की शैली बहुत भारी नहीं थी; इसमें हल्का स्पर्श था। हमने नियम नहीं बनाए - कठोर और सख़्त नियम जिन्हें तोड़ा नहीं जा सके। किसी को सज़ा नहीं दी; कोई कठोर व्यवस्था नहीं थी। बस कुछ दिशा-निर्देश थे और हमने वही किया जो हमें उस समय सही लगा। हमने एक परिवार के रूप में हर चीज़ की समान ज़िम्मेदारी ली। यह सब इस तरह आसान रहा। हमारे लिए, बहुत अधिक टकरावों के बिना एक सहज जीवन जीना महत्त्वपूर्ण था।

यह एक वरदान था कि हम दोनों, वाणी और उमाशंकर, के बीच एक अच्छी समझ थी, हमारे मूल्य समान थे और बच्चों को पालने के विषय में लगभग एक-सी सोच थी। हम दोनों विवाद से परहेज करते थे। एक-दूसरे को समझना और किसी भी ग़लतफहमी या टकराव को हल करने के लिए जल्दी और तार्किक रूप से सामने आना क़ायदा था। यह इसलिए मुमकिन हुआ क्योंकि हम एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते थे। आज, पीछे मुड़कर यह देखने पर कि हमने अपनी बच्चियों का पालन-पोषण कैसे किया, हम कई ऐसी चीज़ें देखते हैं जो हमने एक उद्देश्य के साथ की थीं, लेकिन कई ऐसी चीज़ें भी रहीं जो हमारी मान्यताओं के विरुद्ध थीं।

उस प्रश्न पर वापस जाते हैं जो हमने शुरुआत में पूछा था -क्या हम अपने बच्चों के लिए सब कुछ तय कर सकते हैं? उत्तर स्पष्ट है - नहीं! तो क्या हमें इसे ऐसे ही छोड़ देना चाहिए? नहीं, हमें एक सन्तुलन बनाना होगा। नियोजित हस्तक्षेप और आज़ादी के बीच सन्तुलन। हमें बच्चों को अपना रास्ता ख़ुद चुनने देना चाहिए; हमें उनका सहयोग करना चाहिए लेकिन मूल रूप से, उन्हें वह करने देना चाहिए जो वे चाहते हैं। बुनियादी बात यह है कि हमें पहले उन मूल्यों को स्वयं जीना होगा, जिनका हम प्रसार करना चाहते हैं। यही मुख्य सीख है! आप जीवन को वैसे ही जिएँ जैसे आप चाहते हैं; बच्चे जो चाहते हैं उसमें से ले लेंगे।

वाणी पेरिओडी ने तीन दशकों तक लैंगिक संवेदनशीलता और घरेलू हिंसा के क्षेत्र में काम किया है। वे महिला समाख्या, मैसूर की ज़िला समन्वयक थीं, जो महिलाओं के लिए केन्द्र सरकार की एक शिक्षा परियोजना है। वे कर्नाटक के महिला संगठन, कर्नाटक महिला दौरजन्य विरोधी वोक्कुटा (Karnataka Mahila Daurjnya Virodhi Vokkuta) के निर्माण में बहुत सक्रिय रही हैं। वे अक्सर अख़बारों और सोशल मीडिया पर लिखती हैं। उनका हालिया प्रकाशन संविधान पर बच्चों की किताब *मक्कलिगागी संविधाना* (Makkaligagi Samvidhanaa) है। उन्हें छोटे बच्चों को कहानी सुनाना और कहानी पढ़ना, नाटक करना और रज़ाई (quilts) बनाना अच्छा लगता है। उनसे *periodivani@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

उमाशंकर पेरिओडी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के कर्नाटक राज्य के प्रमुख हैं। उन्हें विकास क्षेत्र में तीस साल से अधिक का अनुभव है। उन्होंने राष्ट्रीय साक्षरता अभियान के साथ-साथ बीआर हिल्स, कर्नाटक में आदिवासी शिक्षा के लिए व्यापक योगदान दिया है। वे ज़मीनी स्तर के कार्यकर्ताओं और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को 'बेयरफुट रिसर्च' (Barefoot Research) में प्रशिक्षण देते आ रहे हैं। वे कर्नाटक स्टेट ट्रेनर्स कलेक्टिव (Karnataka State Trainers' Collective) के संस्थापक सदस्य भी हैं। उनसे *periodi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत' **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर** : अनुज उपाध्याय